मिस्त्र देश पहुँचना (उत्पत्ति ३९–५०)

इसहाक और रिबका ने अपने दोनो पुत्रो को पक्षपात की दृष्टी मे देखकर गलती की। इसहाक ने शिकारी 'एसाव' के साथ पक्षपात किया और रिबका ने याकुब के साथ पक्षपात किया। याकुब ने भी ठिक वैसे ही युसुफ के साथ पक्षपात किया परिणाम स्वरूप बाकि भाई उससे घृणा करने लगे और उसे बेच दिया। पुराने नियम के श्रेष्ठ व्यक्तियो मे से एक था। युसुफ ही के द्वारा याकूब का पुरा परिवार मिस्त्र देश मे प्रवेश करके आकाल के वक्त एक नवजीवन पाया। युसुफ का जीवन बाइबल के एक सिध्द उदाहरण मे से एक है। युसुफ और यीशु मसीह मे हम तकरीबन 130 समानतांए पाते है। याकूब का सारा परिवार जब मिस्त्र मे पहुँचा तब उत्पत्ति के समाप्ति तक वह 70 लोग थे। मृत्यु शैयया पर याकूब के शब्दो को आप पढ, जिसमे उसने अपने बारहो पुत्रो कों आशीष दी उत्पत्ति 49 यहां पुत्र यहुदा कि प्रतिज्ञाओ को भी पढते है जिसका वंशज आनेवाला अधिकारी होगा। स्मरण करे यीशु मसीह को यहुदा के गोत्र का सिंह कहा गया प्रकाशितवाक्य 5:5 और उसका जन्म इसी गोत्र मे हुआ। उत्पत्ति क पुस्तक का प्रारंभ सृष्टी से होता है। मैने बताया कि इस किताब का प्रारंभ सृष्टी से होता है और अंन्त "मृतक संदुक से होता है।" पाप की मजदूरी तो मृत्यु है। रोमियों 6:23 लोगो को एक उध्दारकर्ता की जरूरत थी। निम्मलिखित दी हुई रूपरेखा के अनुसार इस पुस्तक को पढिए आपको इसे समझने मे आसानी होगी। रोज एक अध्याय की जगह रूपरेखा के अनुसार इसे पढीए शायद इससे आप इसे 10 दिन ही मे पढलेंगे। प्रभु आपको आशीष दे।

उत्पत्ति की रुपरेखा

1. जगत और मानवजाती की सृष्टी। उत्पत्ति 1:1 – 2:25
2. पाप और दुख का आरम्भ। उत्पत्ति 3:1–24
3. आदम से नूह तक ।उत्पत्ति 4:1 – 5:32
4. नूह और जलप्रलय ।उत्पत्ति 6:1–10:32
5. बेबीलोन का गुम्मट। उत्पत्ति 11:1–9
6. शेम से अब्राहाम तक। उत्पत्ति 11:30–32
7. कुलपति-अब्राहाम, इसहाक और याकूब उत्पत्ति। 12:1-35-29
8. एसाव की वंशावली उत्पत्ति 36:1–43
9. युसुफ और उसके भाई।उत्पत्ति 37:1-45:28
10. मिस्त्र देश मे ।उत्पत्ति 46:1–50:26

वंशावली

आदम	शेम
↓	↓
कैन	अपर्क्षद
↓	↓
हनोक	शेलह
↓	↓
ईराद	एबेर
↓	↓
महुयाएल	पेलेग
↓	↓
मतूशाएल	रू
↓	↓
लेमेक	सरूग
↓	↓
नूह	नाहोर
	↓
	तेरह
	↓
	अब्राम

Rev.Vinay Dube
Founder & Senior Pastor

DISCIPLESHIP TRAINING CENTRE

Acts Foundation, Potter's House Church ,3rd Lane, Madhuban, Sangvi Pune- 27 Ph.9850833779 ;contact@actsministry.in

बाइबल सर्वेक्षण / Bible Survey

अंक:5 *Course-1* *Aug 2009* मुल्य:10 रू.

.....पिछले अंक का शेष भाग

मित्रो अब तक हमने पूर्ण उत्पत्ति कि किताब की बहुत सारी महत्वपूर्ण जानकारीयॉ हासिल कि लेकिन आइए इस श्रृंखला मे उत्पत्ति के कुल 50 अध्यायों का वर्गीकरण और उनके विश्लेषण को पढने के बाद आपको सम्पूर्ण उत्पत्ति को समझने मे सहायता मिलेगी।

सृष्टी (उत्पत्ति १–२)

उत्पत्ति के पहले दो अध्याय यह सृष्टी का विवरण करते है। इसके पहले 3 वचन मे हम पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा के तीनो रूप को एक साथ पाते है। बाइबल का यह सिध्दान्त है कि हमारा परमेश्वर त्रैक्य है। मतलब पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा। यीशु मसीह ने भी मत्ती 28:19– 20 में अपने चेलो से कहा "इसलिए तुम जाओ और सब जातियो के लोगों को मेरा शिष्य बनाओ और उन्हे पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम मे बपतिस्मा दो।" हम कह सकते है कि पिता ने योजना कि, पुत्र ने उसे अस्तित्व मे लाया और आत्मा ने उसे पुरा किया। यूहन्ना 1:1 और उत्पत्ति के पहले तीन पदो मे हम समानता पाते है। पहले अध्याय मे हम भौतिक संसार कि सृष्टी का वर्णन पाते है। उत्पत्ति के पहले अध्याय के 31 वचन परमेश्वर ने जो कुछ निर्माण किया उसका विवरण करते है। दुसरे अध्याय मे हम पाते है कि परमेश्वर ने पहले अध्याय मे कुछ निर्माण किया था उसका और अधिक वृत्तांत और विस्तार से उल्लेख पाते है। उदाहरण के तौर पर उत्पत्ति 1:26,27 मे पहले ही मनुष्य की सृष्टी कि थी। परन्तु दुसरे अध्याय मे हम उसका विस्तार से उल्लेख आदम और हवा के रूप मे पाते है। उत्पत्ति 2:4–25 दुसरे अध्याय मे हम यह भी पाते है कि परमेश्वर ने बाकि निर्मिती जो कि थी उसका उल्लेख दुसरे अध्याय मे नही किया परन्तु केवल मनुष्य का ही अधिक वर्णन किया, क्योंकि मनुष्य ही परमेश्वर के दृष्टी मे अधिक महत्व का था और क्यो न हो परमेश्वरने मनुष्य को अपने स्वरूप मे जो बनाया था। साथ ही इन दो अध्यायो मे मनुष्य को दिए गए नियम को भी हम देखते हैं।

मनुष्य का पतन (उत्पत्ति ३–४: १–१६)

परमेश्वर ने आदम और हवा को निर्दोषता की अवस्था मे सृजा था केवल उन्हे चुनाव करने की स्वातंत्रता दि गयी थी। परमेश्वर की आज्ञापालन यह मनुष्य मुख्य उद्देश्य था। शैतान जो पाप का सृजनहारा है सर्प के रूप में कार्य किया और आदम और हवा की परिक्षा कर के उनके मन के परमेश्वर के वचन के प्रति संदेह प्रगट किया। और उनका इस परिक्षा मे पतन हुआ। उन्होने शैतान की बात मानकर परमेश्वर कि आज्ञा का उल्लघन किया। आज भी हमे इस बात को समझना है कि शैतान परमेश्वर का वचन जो सत्य है उसके विरूध्द हमारे मन मे संदेह उत्पन्न करता है

और हम उसके बहकावे में आकर पतित हो जाते है। कई बार केवल, नशा बुरी संगत और आदत, आदि को ही हम पाप मानते है। परन्तु उत्पत्ति के प्रारंभ मे ऐसा कुछ नही हुआ परन्तु आज्ञापालन न करना यही पाप हुआ। हमारे लिए भी जो हम विश्वासी है यह समझना जरूरी है कि, मसीह जीवन मे आज्ञापालन का बहुत अधिक महत्व है। खैर पृथ्वी का पहला पाप तो यही था। इसी पाप का परिणाम हम आगे पाते कि मनुष्यो को आशीष से वंचित होना पडा और पतन के बाद बलिदान या भेट या अर्पण प्रथा अस्तित्व मे आयी। इस पतन का और एक दुष्परिणाम हमे देखने को मिलता है जब भाई–भाई का कत्ल करता है।

आदम की वंशावली (४:१७-५:१-३२)

जब परमेश्वर ने हाबिल का बलिदान स्वीकार किया और कैन का नही, तो क्रोधित कैन ने अपने छोटे भाई की हत्या कर दी और भागकर नोद नाम देश मे जो अदन के पूर्व की और है रहने लगा। उत्पत्ति 4:16 तो हम उत्पत्ति 4:17–26 मे आदम के बडे पुत्र कैन कि वंशावली पाते है। और 5 अध्याय मे आदम के दुसरे पुत्र शेत की वंशावली का विवरण नूह तक पाते है। इन बातो कि अधिक जानकारी के लिए मेरा पाठयक्रम 3 के आनेवाले अंको को अवश्य पढे जिसमे मे इन बातो का विस्तार मे उल्लेख करूँगा क्योंकि मेरा यह पाठयक्रम केवल बाइबल सर्वेक्षण का है।

जलप्रलय (उत्पत्ति६-९)

उत्पत्ति का छठवे अध्याय के खुलते ही हम पाते की वृध्दी का एहसास एक बार फिर पृथ्वी पर नजर आने लगता है। उत्पत्ति मे जलप्रलय का वर्णन पाप का विनाश और एक नए जीवन का प्रारंभ है। पाप की वृध्दी के बाद परमेश्वर उस पर अंकुश लगाना चाह रहा था। परमेश्वर ने जलप्रलय पृथ्वी पर इसलिए भेजा ताकि एक बार फिर अच्छी स्थिती पृथ्वी पर आ सके। पृथ्वी नूह के अलावा पुरी तरह पाप से भर चुकी। पापमय हालात मे भी शायद नूह परमेश्वर के साथ चलना सीख गया था। उसने अपनी धार्मिकता भी नही छोडी थी उत्पत्ति 6:9 जबकी बाकी मनुष्य के मन मे जो भी विचार उत्पन्न होते थे वह बुरे ही होते थे। उत्पत्ति 6: 5 अब परमेश्वर धर्मियो को पापियों से अलग करने जा रहा था और उसके लिए उसने जलप्रलय यही एक साधन चुना।नूह जब तक जहाज न बन गया, लागो को चेतावनी देता रहा और लोग उसके चेतावनीयो को अनदेखा करते रहे। जलप्रलय के पहले के 7 दिन नूह तक अपने परिवार के साथ दो–दो अशुध्द जानवर सात–सात शुध्द जानवर नर और मादा को इकठ्ठा करने मे लगा रहा। जलप्रलय के वक्त नूह के तीन बेटे और उनकी पत्निया सहित केवल आठ लोग और वे शुध्द और अशुध्द जानवर जो जहाज मे से बच सके। जहाज यह यीशु मसीह का प्रतिक है। जो कोई यीशु मसीह का है उन्ही का उध्दार होगा। जहाज से बाहर आने के बाद नूह ने अपने परिवार के साथ जो पहला काम किया वह यह था कि उसने एक वेदी बनाई और परमेश्वर की आराधना की। परमेश्वर ने उन्हे एक बार फिर से आशीष दी और उन्हे अधिकार दिया और पृथ्वी के इस भारी दंण्ड के बाद एक बार फिर एक नई मानवीय सभ्यता का आरम्भ हुआ। खगोल शास्त्रीय के द्वारा कई अवशेष और सबुत पुरातन विशेषज्ञ के द्वारा बरामद हुए जो इस बात को साबित करते है कि पृथ्वीपर करीबन 5000 वर्ष पहले कोई बडा जलप्रलय आया था।

बाबुल(उत्पत्ति १०-११)

जलप्रलय के बाद पृथ्वी जिसमे केवल अब आठ ही लोग बचे थे । एक बार फिरसे भरनी शुरू हुई। नूह के तीनो पुत्र शेम, हाम और येपेत के द्वारा सम्पूर्ण पृथ्वी के भर जाने का विश्लेषण हम पाते है। जलप्रलय के पश्चात पृथ्वी भर की जातिया इन्ही मे से होकर बट गई उत्पत्ति १०:३२ हम यहा पर यह भी पाते है कि नूह के पुत्र हाम के वंश मे निम्रोद भी हुआ और पृथ्वी पर पहला वीर वही हुआ। जलप्रलय के बाद मनुष्य शायद महत्वकांक्षी हो चुका था और शायद उसे प्रभु के अधीन और उसकी योजनाओ मे रहना पसंद नही था। इसलिए हम ११ वे अध्याय मे देखते जब मनुष्य ने बाबुल मे एक उंची मीनार बनाना प्रारंभ किया जो आकाश से बात करे, मनुष्य परमेश्वर कि योजनाओ के विरूध्द जा रहा था इसलिए हम देखते है कि एक बार फिर परमेश्वर नीचे उतर आया उत्पत्ति ११:५–६ और प्रभु ने वहां भाषा मे गडबडी पैदा कर दी, और उन्हे सम्पूर्ण पृथ्वी पर फैला दिया और यही से हम राष्टो कि शुरूवात भी देखते है। यही से उत्पत्ति ११:१०–३२ मे नूह के शेम कि वंशावली भी पाते है। जिसमे अब्राहाम, याकुब, दाउद और यीशु मसीह का जन्म हुआ।

अब्राहाम की बुलाहट (उत्पत्ति१२-३८)

मनुष्य के दोषपूर्ण और पापी स्वभाव के बावजुद परमेश्वर अपने अनुग्रह को दिखाना चाहता था वह अपना समाज चुनना चाहता था। वह चाहता था कि उसकी एक अलग चुनी जाति हो, जिन्हे वह एक नाम दे सकें जिसे हम इब्रानि जाति के नाम से जानते है। परमेश्वर ने व्यक्ति अब्राहाम को बुलाया ताकि वह कसदियो के उर को जो मूर्तिपूजक देश था, छोडकर निकल आए और उस अन्जान और अनदेखे स्थान मे जाए, जहां परमेश्वर उसे महान राष्ट का पिता बनाना चाहता था। उत्पत्ति १२-१।३, इब्रानियो ११:८–१९ यही से परमेश्वर की चुनी हुई प्रजा का आरम्भ होता। नूह से अब्राहाम यह ११ वी पीढी थी। अब्राहाम जहां भी गया परमेश्वर के लिए एक वेदी उसने बनाई और परमेश्वर का आदर किया और उसकी आज्ञा का पालन किया। अब्राहाम को परमेश्वर का मित्र भी कहा गया। और प्रभु ने उसके साथ वाचा बांधी की वह राष्टो का पिता होगा उसके द्वारा, पृथ्वी कें समस्त कुल आशीष पाएंगे। उसका परिवार परमेश्वर का विशेष आधिकार प्राप्त परिवार बन गया। परमेश्वरने उसके परिवार के साथ जैसा व्यवहार किया था वैसा किसी और के साथ नही किया। यहुदियोंको सर्वदा परमेश्वर का चुना हुआ कह कर सम्बोधित किया जाता है।

अब्राहाम के पुत्र इसहाक द्वारा, परमेश्वर की प्रतिज्ञाए याकूब तक दी गई। याकूब अपने भगोडेपण की अवधि मे अपने पाप के कारण दुख उठाया और ताडना के पश्चात वह एक महान व्यक्ति सिध्द हुआ। उसका नाम बदल कर "इस्त्राएल" रखा गया जिस का अर्थ है "परमेश्वर के साथ एक अधिकार/राजकुमार" उत्पत्ति ३२-२८। इसी नाम से परमेश्वर के लोग पुकारे जाते है। उसके बारह पुत्र इस्त्राएल के बारह गोत्रो के प्रमुख व्यक्ति बने। उत्पत्ति ४९